स्वातन्त्र्योत्तरभारतीं निरुपमां वन्दामहे सादरम्

78 वें स्वतंत्रता दिवस को केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली में इस बार भी अत्यन्त वैभव और उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपति आदरणीय आचार्य श्रीनिवास वरखेडी जी ने अध्यक्षीय भाषण दिया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस मनाने के साथ-साथ हमें एक नया संकल्प भी लेना चाहिए। भारत को एक विकसित राष्ट्र के रूप में देखने के लिए हमें निरंतर परिश्रम करते रहना चाहिए।

उन्होंने कहा कि विश्वगुरु के रूप में भारत की सांस्कृतिक धरोहर सदैव ही अटल रही है और हमें इसे ध्यान में रखते हुए कार्य करना होगा। हमारा संकल्प भारत के विकास यात्रा से जुड़ा होना चाहिए। संस्कृत वाङ्मय अतीव प्राचीन है और यही वाङ्मय देश की प्राचीनता और वैभव का प्रतिनिधित्व करता है। हमारे वाङ्मय में '**राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्**' का संदेश दिया गया है, जो यह दर्शाता है कि देश सेवा में संस्कृतज्ञों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए।

आचार्य श्रीनिवास वरखेडी जी ने कहा कि जैसे आदि शंकराचार्य जी ने हजारों साल पहले पंचायतन पूजा पद्धति का प्रचार किया था, वैसे ही आज के संदर्भ में हमें '**राष्ट्र पंचायतन**' का समाराधन करना चाहिए। इसमें पाँच मुख्य तत्व शामिल हैं:

1. **संविधान** का समाराधन
2. **राष्ट्र ध्वज** का समाराधन
3. **राष्ट्रीय संस्कृति** का समाराधन
4. **वाङ्मय परंपरा** का समाराधन
5. **भारतीय भाषाओं** का समाराधन

उन्होंने कहा कि हमें राष्ट्र पंचायतन के इन तत्वों के प्रति समर्पित होकर कार्य करना होगा। विशेष रूप से भारतीय भाषाओं के माध्यम से हमें **'विकसित भारत अभियान'** में योगदान देना चाहिए। उन्होंने सभी को 78वें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ दीं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, TTD के भक्ति टीवी चैनल के निर्देशक, डॉ. डी.पी. अनंत जी ने कहा कि हमारे पूर्वजों के त्याग और बलिदान का फल आज हमें मिला है। विशिष्ट अतिथि, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति के कुलपति, आचार्य जी. एस. आर. कृष्णमूर्ति जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि मातृ संस्था में आकर इस विशेष अवसर पर ध्वजारोहण में भाग लेना उनके लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के बिना मनुष्य को कुछ प्राप्त नहीं हो सकता और मुक्ति के लिए भी स्वतंत्रता अपेक्षित है।

उन्होंने '**स्वातन्त्र्योत्तरभारतीं निरुपमां वन्दामहे सादरम्**' कविता के माध्यम से सभी को प्रेरित किया। विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. आर. जी. मुरलीकृष्ण जी ने सभी को मिलजुल कर कार्य

करने की प्रेरणा दी। आज के कार्यक्रम का सफल संचालन कुलपति जी के विशेष कार्याधिकारी एवं कार्यक्रम योजना के निर्देशक प्रो. मधुकेश्वर भट्ट जी ने अत्यन्त व्यवस्थित रूप से किया। सभी आचार्य, अधिकारी तथा छात्र ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से कार्यक्रम में जुड़े रहे।

श्री गणेश ति. पण्डितः
सहयोग - श्री श्रीश समीर के.एस्.
श्री विनय कुमार शुक्ल
श्री निखिल